पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

जीवन हमारा है, हमारे लिए है, उसमें रहना भी हमको, जीना भी हमको, सारी खुशियाँ हमारी ही हैं, लेकिन किन्तु परंतु कहके हम दूसरों की शर्तों पर जीवन जीते हैं। शायद इसलिए तो दुःखी नहीं हैं ना! हमेशा अच्छा करो तो मुश्किल, ना करो तो और मुश्किल। कर रहे हैं तो कहेंगे आप लगे ही रहते हैं थोड़ा आराम कर लो। आराम करने लगे तो कहेंगे आराम हराम है। फिर क्या किया जाए! यह हमें थोड़ा सोचना है।

हम आपको अपने अनुभव के आधार से बताना चाहेंगे। कोई भी सिद्धान्त एक दिन में नहीं बनता, उसे बनाने वाले ने दिन-रात मेहनत की होती है, तब कहीं जाकर एक सिद्धान्त का निर्माण होता है। किसी भी खोज में, चाहे विज्ञान, चाहे समाज शास्त्र या दर्शन शास्त्र, सभी के रचनाकारों ने क्या कुछ नहीं किया होगा। इनकी थीम बनाना, फिर ठीक नहीं लगा, तो फिर बनाना, तब जाके कहीं एक छोटा सा टॉपिक तैयार होता है।

लेकिन उस पर फोकस होने के लिए सबसे पहले उन्होंने क्या किया होगा? हमारे हिसाब से एक चीज़ की होगी, वह है, दुनियादारी छोड़ी होगी। उनके पास इन बातों के लिए समय होगा कि दुनिया में क्या हो रहा है? लोग क्या कह रहे हैं या फिर हमारे घर वाले क्या सोच रहे हैं आदि आदि।

ये सारी चीज़ें किसी भी क्षेत्र में लागू होती हैं। चाहे वो विज्ञान हो या अध्यात्म, सभी में ये चीज़ें एक समान कार्य करती हैं। कोई भी इतिहास लिखने के लिए सिरफिरा होना पड़ता है। यहाँ सिरफिरा का भाव है कि उस विषय के प्रति दृढ़ता के साथ आगे

बढ़ना पड़ता है; खाने, पीने, सोने तक की भी फुर्सत नहीं। ऐसी स्थिति हो, तब जाकर कुछ होगा। हम चाहते हैं, हमारा सब ठीक भी हो जाये, और हमें कुछ करना भी ना पड़े। ठीक तो पक्का हो जायेगा, लेकिन उसके लिए, करना तो पड़ेगा। लेकिन जो हमारी मजबूरियाँ हैं ना, वो हमें आगे बढ़ने नहीं दे रही हैं। बीच में रिश्ते भी निभाने हैं। भाई! ये शर्त हमारे लिए नहीं हैं, आप अपना टाइम वेस्ट कर रहे हैं, यदि ऐसा कर रहे हैं तो। तभी तो हमसे चमत्कार नहीं हो रहे। हम भी लोगों की तरह सब कुछ प्रयोग करते, उन्हीं की तरह रहते, उन्हीं की तरह साधनों, मोबाइल फोन, ईयर फोन, टैब का प्रयोग करते, सब कुछ वैसा ही है। कुछ आपने या हमने नहीं बदला, और सभी यही चाहते हैं कि आप उन्हीं की तरह रहो। लेकिन कुछ अलग करने के लिए अलग तरीके से रहना पड़ेगा।

दुनिया का उदाहरण लो, जिसमें किसी को किसी के प्रति आकर्षण हो, तो वो सबकुछ भूलकर अर्थात् दुनियादारी छोड़ उसी के नियम, शर्तों पर जीवन आखिर तक जीता है। उस समय कोई लाख समझाए, वो मानता है? नहीं ना! ये तो हुई दुनिया की बात। अरे वहाँ तो कोई सुरक्षा भी नहीं है, हर समय हम असुरक्षित हैं। है कि नहीं!

वैसे ही परमात्मा से यदि आपका लगाव हो जाये, तो क्या दुनिया, क्या दुनियादारी! और ये पूरे जीवन, जब तक हैं, तब तक पीछा नहीं छोड़ने वाले! कभी कोई कहता है मेरी माँ बीमार, कोई कहता पिता, किसी के माँ-बाप नहीं तो उसकी फिक्र, कौन हमारे परिवार को पालेगा! तो यहाँ रहने की ज़रूरत नहीं। आप दुनिया में रहो ना! आप जब आध्यात्मिक जीवन अपनाते हो तो क्या यही सोचकर, यहाँ थोड़ा हमें सहारा मिल जायेगा! अरे भगवान तो हमें आत्मनिर्भर बनाना चाहता, और हम हैं कि सहारे छोड़ना ही नहीं चाहते!

मजबूरी में किया गया

- शेष पेज 11 पर...

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-15 (2017-2018)

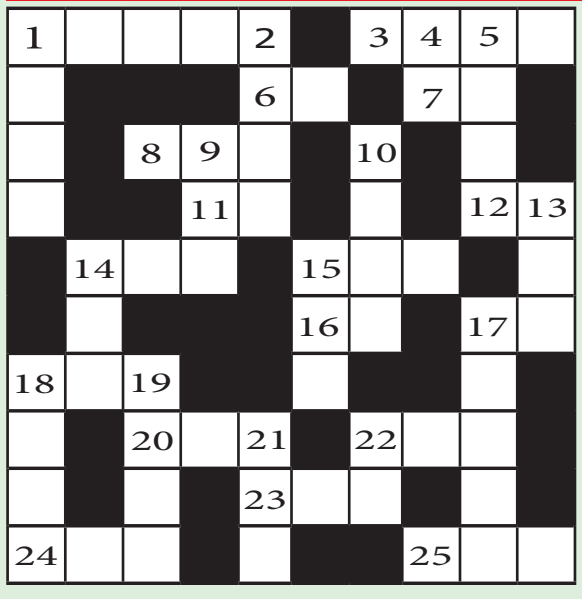

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. अभी तुम बच्चों को....कर पतित से पावन बनना है (4)
2. ....की धरनी सजाकर कहाँ छुप गये तुम बाबा (4)
4. एक मूल तत्व, वायु, समीर (2)
5. सरकना, गिरना, लुढ़कना (4)
9. सुविधा....सेवा के लिए है, इसमें स्वयं को फँसाओं नहीं (3)
10. यह तुम्हारा....जीवन है, सर्वश्रेष्ठ (4)
13. तन, देह, त्वचा (3)
14. भार, बोझ, तौल (3)
15. कर्ज, मांगनी (3)
17. विष्णु का निवास स्थान (5)
18. निर्माणता ही....है, बड़प्पन (4)
19. ईर्ष्या, घृणा (4)
21. लगी....बस एक यही हमें तपस्या करना है (3)
22. लोग, प्रजा, जनता (2)

बायें से दायें

1. यह...संगमयुग है, उत्तमपुरूष (5)
3. ... में जल उठी शमा (4)
6. मन में इसी...का है बसेरा, तात (2)
7. सुगन्ध, गन्ध, ठिकाना (2)
8. सारा...किताब यहाँ ही चूक्तू होना है, लेखा-जोखा (3)
11. सम्पत्ति, जायदाद, ज्ञान .... से स्वयं को भरपूर करना है (2)
12. क्षय, बर्बादी (2)
14. कथन, कहना, विस्तार पूर्वक कहना (3)
15. जवाब, एक दिशा (3)
16. निवास स्थान, घर (2)
17. दूध, दुग्ध (2)
18. बाप जो सुनाते हैं उसका... चिंतन ज़रूर करना है (3)
20. अनाज की पैदावार (3)
22. उत्सव,समारोह,अधिवेशन (3)
23. आकाश, नभ, अम्बर (3)
24. शक्ति, बल (3)
25. बाबा की अवतरण भूमि, सबसे प्राचीन देश (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

वॉशिंगटन डी.सी.-यू.एस.ए.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर डॉ.समिता पटेल के घर पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में उनके साथ केक काटते हुए ब्र.कु. जेना, जोआना लुकासिस, मीना पटेल तथा ज़ैनाब अल-सुवाईज।

भुवनेश्वर-फॉरेस्ट पार्क(ओडिशा)। आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए परिवार अदालत के न्यायाधीश सोम शेखर जेना, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी कृपासिंधु मिश्र, भाजपा के युवा नेता उमेश खंडेलवाल, सामाजिक कार्यकर्ता गीता पात्र, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. शांति।

बाली-इंडोनेशिया। इंडियन काउंसलेट द्वारा आयोजित होली फेस्टिवल के दौरान काउंसिल जनरल ऑफ इंडिया आर.ओ. सुनील बाबू, इंडियन कल्चरल सेंटर के डायरेक्टर मनोहर पुरी, डेनपसर कल्चरल डिपार्टमेंट के प्रतिनिधि आई. गुस्टी नगुराह मातारम, ब्र.कु. जानकी, ब्र.कु. हेमलता,त्रिनिदाद तथा अन्य।

नरवाना-हरि.। शिवजयंती के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जनरल हॉस्पिटल के हेड एस.एम.ओ. डॉ. देवेन्द्र बिंदलिश, डॉ. जय सिंह, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. मीना तथा ब्र.कु. विजय।

दिल्ली-रजौरी गार्डन। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'विश्व नव निर्माण में महिलाओं का योगदान' कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं ट्रैफिक पुलिस इंस्पेक्टर सुमित्रा सोलंकी, रमेश नगर की नगर पार्षद बीना विरमानी, वायु सेना के पूर्व विंग कमांडर जे.एल. मेहता, ब्र.कु. उर्मिला,माउंट आबू तथा ब्र.कु. शक्ति ।

टुंडला-रामनगर(हरि.)। महिला दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में महिलाओं के साथ ब्र.कु. विजय बहन।